जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – फरवरी 2023 ।। अंक – 31 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

लघु उद्यम से
स्वावलंबी बनी गुलनाज
(पृष्ठ – 02)

खाद्य प्रसंस्करण उद्यम के क्षेत्र में
ललिता ने लहराया परचम
(पृष्ठ – 03)

जीविका दीदियों के साथ
संवाद से
निकल रहा समाधान
(पृष्ठ – 04)

योजनाओं का लाभ लेकर उद्यमी बनी जीविका दीदियां

बिहार बदल चुका है। बदलते बिहार में विकास, प्रगति एवं उन्नति का रंग भरने का काम किया है, यहां की सशक्त, समृद्ध महिलाओं ने। जीविका से जुड़कर बिहार के ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं ने कई नवाचारों के साथ बदलाव की जो नींव रखी, उसपर उद्यम का एक भव्य महल खड़ा हो चुका है। राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं का लाभ लेकर जीविका दीदियां नवीनतम तकनीकी ज्ञान से दक्ष होकर उद्यमी के रूप में अपनी नई पहचान बना चुकी हैं। राज्य सरकार की योजनाएं उद्यमी महिलाओं के सपनों को पूरा करने में हर संभव मदद प्रदान कर रही है। इन योजनाओं में बिहार मुख्यमंत्री उद्यमी योजना, बिहार स्टार्टअप योजना, सतत् जीविकोपार्जन योजना, कृषि यंत्र बैंक, मुर्गी पालन, मुख्यमंत्री कोशी मलबरी परियोजना, दीदी की पौधशाला आदि प्रमुख हैं। योजनाओं की मदद से जीविका दीदियां उद्यमिता की नई कहानी गढ़ रही हैं और सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार कर विकास की मुख्यधारा में शामिल हो गयी हैं। आज पूरे बिहार में विभिन्न उद्यमों से जुड़कर जीविका दीदियां अपनी नई पहचान बना रही हैं।

जीविका दीदियां बड़ी संख्या में 'बिहार मुख्यमंत्री उद्यमी योजना' का लाभ ले रही हैं। जीविका दीदियां नया उद्यम स्थापित करने के लिए इस योजना से जुड़कर 10,00,000 रूपये तक का ऋण प्राप्त कर रही हैं। इस योजना का लाभ लेकर दीदी अपने उद्यम के कुल लागत का 50 फ़ीसदी या फिर अधिकतम 5,00,000 रूपये का अनुदान भी प्राप्त कर रही हैं और बाकी 5,00,000 रूपये बिना ब्याज के उन्हें प्राप्त हो रही है। बिहार समेकित मुर्गी विकास योजना के तहत भी जीविका दीदियां बैकयार्ड मुर्गी पालन की गतिविधियों द्वारा आर्थिक स्वावलंबन की राह में आगे बढ़ रही हैं। सतत् जीविकोपार्जन योजना से आर्थिक मदद लेकर 147220 अत्यंत गरीब दीदी अपना–अपना उद्यम प्रारंभ कर अपने जीवन को बदलने का कार्य कर रही हैं। मुख्यमंत्री कोशी मलवरी परियोजना का लाभ लेकर भी राज्य की 4547 दीदियां रेशम उत्पादन की गतिविधि से जुड़कर अपने जीवन को संवारने का काम कर रही हैं। मनरेगा तथा पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के सहयोग से दीदी की पौधशाला का संचालन जीविका दीदियां सफलता पूर्वक कर रही हैं। राज्य में इस उद्यम से 487 दीदियां लाभान्वित हो रही हैं।

कृषि विभाग के सहयोग से जीविका दीदियां कृषि यंत्र बैंक का संचालन भी ग्रामीण स्तर पर कर रही हैं। कृषि यंत्र बैंक के संचालन से जहां दीदियां आधुनिक कृषि यंत्रों से अपनी खेती के कार्य को बढ़ावा दे रही हैं, वहीं इसकी आमदनी से आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं। इसके अलावे सरकार द्वारा गाय पालन, बकरी पालन, मधुमक्खी पालन, बतख पालन, मत्स्य पालन आदि गतिविधियों के लिए भी अलग–अलग योजनाओं का संचालन किया जा रहा है, जिसका लाभ जीविका दीदियां उठा रही हैं। बिहार स्टार्टअप योजना का भी लाभ लेने के लिए जीविका दीदियां प्रयासरत है।

इस प्रकार बिहार की आधी आबादी का एक बड़ा हिस्सा जीविका के साथ जुड़कर अपने उद्यमों द्वारा राज्य की प्रगति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। आज राज्य सरकार के प्रयासों एवं जीविका के सहयोग से जीविकोपार्जन की विभिन्न गतिविधियों से जुड़ी जीविका दीदियां हर कदम पर, हर डगर पर पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर एक नया इतिहास रच रही हैं।

लघु उद्यम से स्वावलंबी बनी गुलनाज

पर्दा प्रथा से बाहर निकलकर ग्रामीण परिवेश की महिलाओं ने स्वावलंबन और सशक्तीकरण की मिसाल पेश की है। आज सशक्त दीदियां अपने परिवार एवं समाज को सबल बना रही हैं। इन्हीं सशक्त महिलाओं में से एक है लखीसराय जिला की गुलनाज प्रवीण। मो. नईमुद्दीन हकीम की बेगम गुलनाज प्रवीण ने पर्दा प्रथा को दरकिनार करते हुए हुए वर्ष 2014 में चंदा जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य बनीं। समूह की बैठक में इन्हें सर्वसम्मति से सचिव के रूप में चुन लिया गया। घर की आर्थिक स्थिति दयनीय थी। पति हाकिम का कार्य करते हैं। इस रोजगार से घर चलाना मुश्किल था। ऐसे में गुलनाज प्रवीण ने स्वरोजगार का मन बनाया। अपने व्यवसाय के प्रारंभ करने की चर्चा उन्होंने समूह में किया। समूह के सदस्यों ने अगरबत्ती निर्माण एवं बिक्री व्यवसाय करने की सलाह दी। इसके लिए जीविका से उन्हें मार्गदर्शन भी मिला। गुलनाज प्रवीण ने अगरबत्ती उद्योग के लिए अप्रैल 2018 में दस हजार रूपये ऋण लिया। घर में ही अगरबत्ती बनाकर बेचने लगी। धीरे–धीरे उनके अगरबत्ती की मांग बढ़ने लगी। मुनाफा भी होने लगा। गुलनाज प्रवीण ने समूह से लिए गए ऋण को वापस कर दिया। पुनः समूह से 40 हजार रूपये ऋण लेकर अगरबत्ती के कारोबार में निवेश किया। गुलनाज कहती हैं कि–'घर से तो अगरबत्ती की बिक्री होती ही है, वहीं विभिन्न दुकानों से भी मांग के अनुरूप आपूर्ति की जा रही है। अगरबत्ती निर्माण एवं बिक्री कार्य में ससुर, पति और देवर भी मदद करते हैं। बेटियां स्कूल जाती हैं। अगरबत्ती बिक्री से प्रतिदिन 4 से 5 सौ रुपये का मुनाफा हो रहा है।' वर्त्तमान में गुलनाज के पास लगभग एक लाख रुपये की परिसंपत्ति है। गुलनाज प्रवीण अपने इस लघु उद्योग को और बड़ा बनाना चाहती है। वह समूह से ऋण लेकर अगरबत्ती निर्माण के लिए मशीन लगाने की तैयारी में है। आज गुलनाज प्रवीण महिला सशक्तीकरण एवं स्वावलंबन की मिशाल बन गई हैं।

पौष्टिक लड्डू से मिला स्वावलंबन का स्वाद

शेखपुरा जिलान्तर्गत शेखपुरा सदर प्रखंड के अवगिल गाँव की निवासी नीतू देवी वर्ष 2015 में अनमोल जीविका महिला ग्राम संगठन के राधा जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। वर्ष 2018 में इनके मन में अपने घर से ही व्यवसाय की शुरुआत का विचार आया। स्वास्थ्य एवं पोषण विषयक प्रशिक्षण में इन्हें पौष्टिक लड्डू बनाने के बारे में जानकारी दी गयी। प्रशिक्षण से मिली जानकारी के बाद नीतु ने घरेलू उपयोग के लिए सोयाबीन से लड्डू का बनाने का काम अपने घर पर ही शुरू किया। लड्डू का उपयोग उन्होंने अपने घर में करना शुरू किया और अपने बच्चों को इसका सेवन करवाने लगी। यह पौष्टिक लड्डू आने वाले दिनों में उनके लिए रोजगार का सृजन करेगा ऐसा नीतू ने कभी नहीं सोचा था। जब नीतू दीदी के द्वारा जिले के ही कृषि मेले में सोयाबीन से बने पौष्टिक लड्डू को आयोजकों एवं आगंतुकों द्वारा सराहा गया तब उन्हें समझ आया कि इसे बना कर बेचा जा सकता है। महिला दिवस 2022 के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में भी उनके द्वारा सोयाबीन से बने पौष्टिक लड्डू को प्रदर्शित किया गया। विभिन्न आयोजनों के अलावा मेला–महोत्सवों में भी इनके द्वारा बनाये गए सोयाबीन के पौष्टिक लड्डू की काफी बिकी होती है। पटना में आयोजित सरस मेले में इनके द्वारा 70 हजार रूपए का लड्डू बेचा गया। इसके साथ–साथ सदर अस्पताल, शेखपुरा स्थित दीदी की रसोई में नीतू दीदी द्वारा निर्मित पौष्टिक लड्डू उपलब्ध है। इस व्यवसाय को शुरू करने में इन्होंने समूह से ऋण लिया और कुछ पूंजी उन्होंने अपने घर से लगाया। पीएमएफएमई योजना से उन्हें 20 हजार रूपये का ऋण प्राप्त हुआ। अपने व्यवसाय को उन्होंने बढ़ाना शुरू किया। इस घरेलू उद्योग को अपनी मेहनत के बल पर एक नई पहचान दिलाने के लिए नीतू मिष्ठान भण्डार की स्थापना की। वर्त्तमान में नीतू प्रति माह 15–20 किलो लड्डू बना कर बेच लेती हैं। साथ ही अन्य मिठाई भी बना कर बेचती हैं, जिससे उनकी मासिक आमदनी 15 हजार रूपये से अधिक है। नीतू आज आत्मनिर्भर होकर निरंतर आगे कदम बढ़ा रही हैं।

पर्यावरण संरक्षण से आर्थिक सशक्तीकरण की पहल

मधुबनी जिला के मधवापुर प्रखंड की देवकी देवी मूलरूप से खेती एवं नर्सरी के व्यवसाय से जुड़ी हैं। इनके पति इन्द्रदेव पंजियार की अभिरूचि भी नर्सरी में है, जिसके लिए उनके पास जमीन एवं सिचाई जैसी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध है। इसी व्यवस्था एवं सुविधा को देखते हुए देवी मां जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी देवकी देवी का अनुबंध वन विभाग के साथ हुआ और उन्हें एक यूनिट पौधशाला दिया गया। देवकी देवी वर्ष 2016 में जीविका समूह के साथ जुड़ी। समूह से ऋण लेकर उन्होंने अपने परिवार की बेहतरी के लिए काम किया। दीदी के प्रयास से बच्चों को सफलता मिली। उनके बच्चे अच्छे पद पर काम कर रहे हैं। स्वयं सहायता समूह के द्वारा अन्य गतिविधियों के साथ ही उन्हें दीदी की नर्सरी के विषय में जानकारी मिली। देवकी के पास दीदी की नर्सरी हेतु आवश्यक जमीन उपलब्ध होने के कारण उन्होंने इसके लिए वन विभाग को आवेदन करने का निर्णय लिया। इस निर्णय के बाद देवकी ने वन विभाग को अपना आवेदन दिया और वन विभाग के साथ उनका अनुबंध हुआ। देवकी देवी को वन विभाग के द्वारा मुख्यमंत्री निजी पौधशाला योजना के अन्तर्गत नर्सरी आवंटित किया गया, जिसकी देख–भाल वह स्वयं कर रही है। देवकी के पति इस काम में उनका सहयोग करते हैं। नर्सरी की देखभाल हेतु उन्हें वन विभाग के द्वारा 1 लाख 40 हजार रूपये अग्रिम राशि का भुगतान किया गया। पौधों की देख–भाल के लिए वन विभाग द्वारा बीस रूपये प्रति पौधा दिया जाता है। दीदी की नर्सरी से देवकी देवी की सालाना आमदनी लगभग दो लाख रूपये है। वह नर्सरी के संचालन से काफी खुश हैं। देवकी का कहना है कि–'नर्सरी से पर्यावरण संरक्षण के साथ उनकी आर्थिक स्थिति में भी निरंतर सुधार हो रहा है।'

खाद्य प्रसंस्करण उद्यम के क्षेत्र में ललिता ने लहराया परचम

ललिता देवी भागलपुर जिला के गोराडीह प्रखंड की रहने वाली हैं। उनका परिवार पहले मजदूरी पर आश्रित था। रोजगार के अभाव के कारण ललिता को परिवार के भरण–पोषण में काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा था। इसी बीच वर्ष 2017 में ललिता अर्पण जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ गई। इसके बाद उन्होंने समूह से 7,000 रुपये ऋण लेकर अचार बनाने का काम प्रारंभ किया। अचार बनाकर बेचने से इन्हें अच्छी आमदनी होने लगी। समूह से ललिता ने फिर से 20,000 रूपये ऋण लेकर अचार के साथ–साथ पापड़, सत्तू, बड़ी, मोरब्बा जैसी खाद्य सामग्रियां बनाकर बेचने लगीं। हालांकि शुरुआत में इन्हें अपने उत्पादों को बेचने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। लेकिन जीविका के माध्यम से इन्हें विभिन्न आयोजनों, मेलों और स्टॉलों में उत्पादों को प्रदर्शित करने का अवसर मिला। इससे ललिता देवी के उत्पादों के बारे में लोगों को जानकारी मिलने लगी। परिणामस्वरूप आचार एवं बड़ी उत्पादों को पहचान मिली और धीरे–धीरे इसकी मांग भी बढ़ने लगी। ललिता देवी अब बड़े पैमाने पर आचार, बड़ी, बेसन, सत्तू, दाल, पापड़ आदि खाद्य सामग्रियां तैयार कर बेचने का कार्य करने लगी हैं। इससे न केवल इनकी अलग पहचान बनी है बल्कि इस व्यवसाय से उन्हें अच्छी आमदनी भी होने लगी है। उन्होंने समूह से पुनः 40,000 रुपये का ऋण लेकर अपने व्यवसाय का विस्तार किया है। ललिता ने अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने के लिए चक्की एवं पैकिंग मशीन खरीदा है। इससे खाद्य सामग्रियों को तैयार करने में आसानी होने लगी है। ललित देवी ने पीएमएमएमई योजना के तहत आवेदन किया था। इसके तहत 5 लाख रुपये तक का ऋण स्वीकृत हो गया है। इन्हें प्रथम किस्त के रूप में 80,000 रुपये उपलब्ध कराया गया है। अब ललिता अपने व्यवसाय का स्वरूप बड़ा करने की योजना पर काम कर रही है।

जीविका दीदियों के साथ संवाद से निकल रहा समाधान

बिहार के माननीय मुख्यमंत्री राज्य के सर्वांगिण विकास और सामाजिक सद्भाव के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। उनके समेकित प्रयासों की वजह से राज्य ने कई क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। महिला सशक्तीकरण, जीविकोपार्जन, ग्रामीण विकास और समाज सुधार से लेकर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में शुरू की गई अनूठी पहल एवं नवाचार की वजह से राष्ट्रीय फलक पर आज बिहार की अलग पहचान बनी है। माननीय मुख्यमंत्री ने राज्य में महिला सशक्तीकरण के साथ–साथ समाज सुधार की जो परिकल्पना की है, वह अब फलीभूत होने लगा है। जीविका ने माननीय मुख्यमंत्री के परिकल्पनाओं को आकार दिया है। बिहार में गठित 10 लाख से ज्यादा जीविका स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से 1 करोड़ 27 लाख से अधिक महिलाएं संगठित हुई हैं और वह सशक्तीकरण की राह पर गतिमान हैं। विभिन्न मंचों पर महिलाओं में आए बदलावों की गूंज साफ सुनाई देती है। जमीनी स्तर पर आ रहे इन बदलावों को महसूस करने के लिए माननीय मुख्यमंत्री स्वयं नियमित रूप से क्षेत्र भ्रमण करते रहे हैं। इस दौरान वह राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का निरीक्षण, अवलोकन और समीक्षा करते हैं तथा जीविका दीदियों के साथ संवाद स्थापित कर समस्याओं के समाधान का रास्ता भी सुझाते हैं।

माननीय मुख्यमंत्री का जनता से सीधा संवाद स्थापित करने तथा योजनाओं का जमीनी स्तर पर हो रहे क्रियान्वयन का मूल्यांकन करने का लंबा इतिहास रहा है। माननीय मुख्यमंत्री हमेशा ही क्षेत्र भ्रमण कर योजनाओं की समीक्षा करते हैं और जीविका दीदियां एवं आम जनता के साथ सीधा संवाद कर समस्याओं का समाधान करते हैं। साथ ही नई योजनाओं और पहल की परिकल्पना भी करते हैं। ज्ञातव्य है कि माननीय मुख्यमंत्री ने कई योजनाओं और महत्वपूर्ण निर्णयों की घोषणा जीविका दीदियों के साथ संवाद के दौरान ही किया है। इसमें विशेष रूप से राज्य में 'पूर्ण शराबबंदी' का निर्णय भी शामिल है। माननीय मुख्यमंत्री ने जीविका दीदियों के साथ संवाद के दौरान ही दीदियों की मांग पर बिहार में शराबबंदी की घोषणा की थी। इसके बाद पूर्ण शराबबंदी की सफलता और राज्य सरकार द्वारा शुरू किए गए समाज सुधार अभियानों को बल देने के लिए माननीय मुख्यमंत्री ने वर्ष 2022 में 'समाज सुधार यात्रा' की थी। इस क्रम में माननीय मुख्यमंत्री ने समाज सुधार अभियान में शामिल जीविका दीदियों के साथ संवाद करते हुए उनके अनुभवों को सुना था। इसके अलावा बिहार सरकार की महत्वाकांक्षी गतिविधि 'सतत् जीविकोपार्जन योजना' के तहत लाभ प्राप्त कर अपने जीवन पथ पर आगे बढ़ने वाली दीदियों से भी रूबरू हुए थे। इसकी अगली कड़ी के रूप में 5 जनवरी 2023 को माननीय मुख्यमंत्री ने पश्चिम चंपारण जिले से अपनी 'समाधान यात्रा' शुरू की। समाधान यात्रा के तहत उन्होंने राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन का अवलोकन, निरीक्षण एवं समीक्षा करने के साथ ही जीविका दीदियों के साथ संवाद भी स्थापित किया। क्षेत्र भ्रमण के दौरान उन्होंने राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन से समाज में आ रहे बदलावों को जमीनी स्तर पर महसूस किया। इस दौरान राज्य सरकार के माननीय मंत्रियों के साथ विभिन्न विभागों के उच्चस्थ अधिकारियों की उपस्थिति रही।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, सिवान
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार